

नवमोऽध्यायः रुधादिगणः

“रुध्” धातु इस गण की पहली धातु है। “रुध्” आदि धातुओं का विवरण जिस गण में हो उसे “रुधादिगण” कहते हैं।

इस गण में धातु और प्रत्यय के मध्य “श्नम्” (न) विकरण आ जाता है। जैसे :-

रुध् + ति, रु + न् + ध् + ति + रुणद्धि।

परस्मैपदी धातुओं के रूप

[रुध्] = रोकना
(लट्)

	एक व०	द्विव०	बहु व०
प्र० पु०	रुणद्धि	रुन्द्धः	रुन्धन्ति
म० पु०	रुणत्सि	रुन्द्धः	रुन्द्ध
उ० पु०	रुणध्मि	रुन्ध्वः	रुन्ध्मः

(लृट्)

प्र० पुन	रोत्स्यति	रोत्स्यतः	रोत्स्यन्ति
म० पु०	रोत्स्यसि	रोत्स्यथः	रोत्स्यथ
उ० पु०	रोत्स्यामि	रोत्स्यावः	रोत्स्यामः

(लोट्)

प्र० पु०	रुणद्ध	रुन्द्धाम्	रुन्धन्तु
म० पु०	रुन्द्ध	रुन्द्धम्	रुन्द्ध
उ० पु०	रुणधानि	रुणधाव	रुणधाम

(लङ्)

प्र० पु०	अरुणत्-द	अरुन्द्धाम्	अरुन्धन्
म० पु०	अरुणाः-द	अरुन्द्धम्	अरुन्द्ध
उ० पु०	अरुणाधम्	अरुन्ध्व	अरुन्ध्म

(विधिलिङ्)

प्र० पु०	रुन्ध्यात्	रुन्ध्याताम्	रन्ध्युः
म० पु०	रुन्ध्याः	रुन्ध्यातम्	रुन्ध्यात
उ० पु०	रुन्ध्यम्	रुन्ध्याव	रुन्ध्याम

[हिंस] = मारना
(लट्)

	द्विव०	बहु व०
हिंस्तः	हिंसन्ति	
हिंस्थः	हिंस्थ	
हिंस्वः	हिंस्मः	

(लृट्)

हिंसिष्यति	हिंसिष्यतः	हिंसिष्यन्ति
हिंसिष्यसि	हिंसिष्यथः	हिंसिष्यथ
हिंसिष्यामि	हिंसिष्यावः	हिंसिष्यामः

(लोट्)

हिंस्तु	हिंस्ताम्	हिंसन्तु
हिंसि	हिंस्तम्	हिंस्त
हिंसाणि	हिंसाव	हिंसाम

(लङ्)

अहिंन्त	अहिंस्ताम्	अहिंसन्
अहिंन्	अहिंस्तम्	अहिंसत
अहिंसम्	अहिंस्व	अहिंस्म

(विधिलिङ्)

हिंस्यात्	हिंस्याताम्	हिंस्युः
हिंस्याः	हिंस्यातम्	हिंस्यात
हिंस्याम्	हिंस्याव	हिंस्याम

अनुरूप धातुरूप

धातु	अर्थ	लट्	लृट्	लोट्	लङ्	विधिलिङ्
भिद्	फाड़ना	भिनत्ति	भेत्यति	भिन्तु	अभिन्त	भिन्द्यात्
छिद्	काटना	छिनत्ति	छेत्यति	छिन्तु	अछिन्त	छिन्द्यात्

आत्मनेपदी धातुरूप

[भुज्] = भोजन करना

	(लट्)			(लृट्)		
	एक व०	द्विव०	बहु व०	एक व०	द्विव०	बहु व०
प्र० पु०	भुङ्क्ते	भुज्जाते	भुज्जते	भोक्ष्यते	भोक्ष्येते	भोक्ष्यन्ते
म० पु०	भुङ्क्षे	भुज्जाथे	भुङ्गध्वे	भोक्ष्यसे	भोक्ष्येथे	भोक्ष्यध्वे
उ० पु०	भुज्जे	भुज्जवहे	भुज्जमहे	भोक्ष्ये	भोक्ष्यावहे	भोक्ष्यामहे
	(लोट्)			(लङ्)		
प्र० पु०	भुङ्क्ताम्	भुज्जाताम्	भुज्जन्तु	अभुङ्क्त	अभुज्जाताम्	अभुज्जत
म० पु०	भुङ्क्ष्व	भुज्जाथाम्	भुङ्गध्वम्	अभुङ्क्थाः	अभुज्जाथाम्	अभुङ्गध्वम्
उ० पु०	भुनजै	भुनजावहै	भुनजामहै	अभुज्जि	अभुज्ज्वहि	अभुज्जमहि

विधिलिङ्

प्र० पु०	भुज्जीत	भुज्जीयाताम्	भुज्जीरन्
म० पु०	भुज्जीथाः	भुज्जीयाथाम्	भुज्जीध्वम्
उ० पु०	भुज्जीय	भुज्जीवहि	भुज्जीमहि

“तन्” धातु इस गण की पहली धातु है। “तन्” आदि धातुओं का विवरण जिस गण में हो उसे तनादगिण कहते हैं।

तनादगिण में धातु और प्रत्यय के मध्य “उ” विकरण आता है। जैसे :-

तनादगिण में धातु और प्रत्यय के मध्य “उ” विकरण आता है। जैसे :-

तन् + उ + ति + “तनोति” इत्यादि।

परस्मैपद धातु रूप

[तन्] = फैलाना

[कृ] = करना

	(लट्)			(लृट्)		
	एक व०	द्विव०	बहु व०	एक व०	द्विव०	बहु व०
प्र० पु०	तनोति	तनुतः	तन्वन्ति	करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति
म० पु०	तनोषि	तनुथः	तनुथ	करोषि	कुरुथः	कुरुथ
उ० पु०	तनोमि	तनुवः	तनुमः	करोमि	कुर्वः	कुर्मः
		तन्वः	तन्मः			

(लृट्)
(लृट्)

प्र० पु०	तनिष्यति	तनिष्यतः	तनिष्यन्ति	करिष्यति	करिष्यतः	करिष्यन्ति
म० पु०	तनिष्यसि	तनिष्यथः	तनिष्यथ	करिष्यसि	करिष्यथः	करिष्यथ
उ० पु०	तनिष्यामि	तनिष्यावः	तनिष्यामः	करिष्यामि	करिष्यावः	करिष्यामः

	(लोट्)			(लोट्)	
प्र० पु०	तनोतु	तनुताम्	तन्वन्तु	करोतु	कुरुताम्
म० पु०	तनुहि	तनुतम्	तनुत	कुरु	कुरुतम्
उ० पु०	तनवानि	तनवाव	तनवाम	करवाणि	करवाव

(लङ्)

	एक व०	द्विव०	बहु व०
प्र० पु०	अतनोत्	अतनुताम्	अतन्वन्
म० पु०	अतनोः	अतनुतम्	अतनुत
उ० पु०	अतनुवम्	अतनुव	अतनुम
		अतन्व	अतन्म

(विधिलङ्)

प्र० पु०	तनुयात्	तनुयाताम्	तनुयुः
म० पु०	तनुयाः	तनुयातम्	तनुयात
उ० पु०	तनुयाम्	तनुयाव	तनुयाम

(लङ्)

	एक व०	द्विव०	बहु व०
अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्	
अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत	
अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म	

(विधिलङ्)

कुर्यात्	कुर्याताम्	कुर्युः
कुर्याः	कुर्यातम्	कुर्यात
कुर्याम्	कुर्याव	कुर्याम

संस्कृत में अनुवाद करो :-

(क)

1. भारतीय सैनिकों ने शत्रु को सीमा पर ही रोक लिया।
2. वृक्षों के शिखर तक लताएँ फैली हुई हैं।
3. दूध का वह क्या करेगा ? जबकि दूध उसे भाता ही नहीं ?
4. लाल बहादुर शास्त्री जी ने कहा कि हम एक समय भोजन करेंगे।
5. आग जलाने के लिए वह वृक्ष का तना काटता है।
6. पहली के बच्चे पुस्तकें अधिक फाड़ते हैं।
7. किसी को मत मारो, हिंसा करना पाप है।
8. महर्षि दयानन्द ने ब्रह्मचर्य का पालन किया।
9. स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी चान्द्रायण - व्रत करते थे।
- 10 गाय अमृत तुल्य दूध देती है उसे मत मारो।

(ख)

विद्यालय हमारा मन्दिर है। हमें उसे श्रद्धा की दृष्टि से देखना है। विद्यालय में 20 छात्र तथा 10 छात्राएँ पढ़ती हैं। वहाँ पढ़ाने वाले 13 अध्यापक हैं। पुराने जमाने में विद्यार्थी को शिष्य कहते थे। अध्यापक की संज्ञा गुरु थी। गुरु हमें अच्छी शिक्षा देते हैं। वे बुराई से रोकते हैं। सदाचार का पालन करो तथा धर्म को फैलाओ यह उनका आदेश है। जो छात्र गुरु का आदर नहीं करते उन्हें विद्या नहीं आती। विद्या सर्वश्रेष्ठ धन है। विद्या से रहित मनुष्य पशु के समान है। विद्वान् की पूजा सर्वत्र होती है।

